eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

भारतीय ग्रामीण समुदायों में स्वास्थ्य सेवाओं का अभावः एक सांख्यिकीय विश्लेषण

[1]कविता
[2]डा0 नाहिद परवीन
[1]शोधार्थिनी समाजशास्त्र विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश
[2]समाजशास्त्र विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश

Received: 20 Jan 2024, Accepted: 28 Jan 2024, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2024

Abstract

भारतीय ग्रामीण समाज, जहां देश की विशाल आबादी रहती है, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और पहुंच में गहरे अंतर का सामना करती है। यह अंतर न केवल ग्रामीण आबादी के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि यह राष्ट्रीय स्वास्थ्य लक्ष्यों को प्राप्त करने की भारत की क्षमता को भी गंभीर रूप से प्रभावित करता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य सेवा की कमी के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करना, इसे अपने सांख्यिकीय आंकड़ों के माध्यम से समझना और इस समस्या का समाधान करने के लिए सिफारिशें प्रदान करना है।

शब्द कुंजी– भारतीय ग्रामीण समुदाय, स्वास्थ्य सेवाएं, उपलब्धता, अभाव, सांख्यिकीय विश्लेषण।

Introduction

ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी का मुख्य कारण विविधता में निहित है। ग्रामीण क्षेत्रों की विशालता, जनसंख्या घनत्व और भौगोलिक बाधाओं के साथ–साथ सामाजिक–आर्थिक स्थितियां ऐसे मुद्दों में योगदान करती हैं। इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में लिंग और जातीय असमानताएं भी प्रमुख चुनौतियों के रूप में उभरती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच की कमी को देखते हुए, यह महत्वपूर्ण है कि हम उन प्रमुख कारकों की पहचान करें जो इस असमानता को जन्म देते हैं। इनमें से एक स्वास्थ्य सेवाओं का असंतुलित वितरण है, जहां अधिकांश संसाधन और स्वास्थ्य कार्यकर्ता शहरी केंद्रों में केंद्रित हैं। नतीजतन, ग्रामीण आबादी अक्सर बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल और आपातकालीन सेवाओं तक पहुंचने में असमर्थ होती है। इसके अलावा, स्वास्थ्य शिक्षा और जागरूकता की कमी ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी का एक और महत्वपूर्ण कारण है। जागरूकता की कमी के कारण, ग्रामीण निवासी अक्सर स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान करने और उनके उपचार के लिए समय पर कदम उठाने में विफल रहते हैं। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं तक वित्तीय पहुंच भी एक बड़ी चुनौती है। गरीबी और आय के निम्न स्तर के कारण, ग्रामीण निवासी अक्सर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए आवश्यक खर्चों को वहन करने में असमर्थ होते हैं। इससे उनके स्वास्थ्य परिणामों पर गहरा प्रभाव पड़ता है और वे गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं के लिए उचित उपचार प्राप्त करने में विफल रहते हैं। इन सभी कारकों को एक साथ रखा जाए, तो ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी एक जटिल समस्या है जिसके समाधान के लिए एक व्यापक और बहु–आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यह न केवल स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

और पहुंच बढ़ाने के बारे में है, बल्कि यह सुनिश्चित करने के बारे में भी है कि ये सेवाएं गुणवत्तापूर्ण, सुलभ और सस्ती हों। हालांकि, इसके लिए सरकारी नीतियों, सामुदायिक पहल और निजी क्षेत्र की भागीदारी की आवश्यकता होती है।

स्वास्थ्य सेवाओं की स्थितिः एक सांख्यिकीय अवलोकन व स्वास्थ्य सेवा और ग्रामीण भारतः चुनौतियां और संभावनाएं–

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव एक बड़ी चुनौती है। यहां, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की कमी और उचित उपकरणों और दवाओं की कमी कुछ मुख्य कारक हैं जो स्वास्थ्य सेवाओं के मानकों में गिरावट का कारण बनते हैं । ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की अधिकता और गुणवत्ता की कमी के कारण, संक्रामक रोगों, मातृ मृत्यु दर और बाल मृत्यु दर में वृद्धि हुई है। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी को देखते हुए, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने सिफारिश की है कि प्रति 10,000 जनसंख्या पर कम से कम 5 स्वास्थ्य केंद्र होने चाहिए। हालांकि भारत में यह संख्या 2 से 4 के बीच ही है, जो डब्ल्यूएचओ के मानकों को पूरा नहीं करती है। इस कमी के कारण, ग्रामीण क्षेत्रों में लोग उचित स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक और राजनीतिक उपायों की मांग कर रहे हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और पहुंच में सुधार के लिए, सरकारों को निवेश करने की आवश्यकता है। स्वास्थ्य केंद्रों में सुधार, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की भर्ती और प्रशिक्षण में अधिक धन का निवेश किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, तकनीकी उपकरणों और दवाओं तक पहुंच में सुधार किया जाना चाहिए, ताकि स्थानीय स्वास्थ्य केंद्र उचित सेवाएं प्रदान कर सकें। साथ ही सामुदायिक स्वास्थ्य प्रणालियों को मजबूत किया जाए, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय स्वास्थ्य सुविधाओं का उपयोग किया जा सके। अधिक स्वास्थ्य सुविधाओं की प्राप्ति के साथ, ग्रामीण क्षेत्रों में लोग स्वस्थ और समृद्ध जीवन जीने में सक्षम होंगे। इससे न केवल उनका जीवन स्तर बढ़ेगा, बल्कि देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

हेल्थकेयर वर्कर की कमीः– ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच अंतर– स्वास्थ्य कर्मियों की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती है, खासकर भारत के ग्रामीण इलाकों में। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति 1,000 निवासियों पर उपलब्ध डॉक्टरों की संख्या 0.5 से कम है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह संख्या 1.5 और 2 के बीच है। इस अंतर का कारण मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी और संचार और परिवहन की कमी है।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य कर्मियों की कमी का मुख्य कारण विभाजन की अधिकता है। अक्सर, डॉक्टर और अन्य स्वास्थ्य कार्यकर्ता शहरों में काम करना पसंद करते हैं, जहां वे बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं, अधिक शिक्षा विकल्पों और अधिक सामाजिक जीवन का आनंद ले सकते हैं। नतीजतन, ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टरों और अन्य स्वास्थ्य कर्मियों की कमी है, जिससे स्थानीय लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंचने में समस्या हो रही है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में संचार और परिवहन की कमी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। अक्सर गांवों और छोटे शहरों

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को जल्दी और सही समय पर गांवों तक पहुंचाने के लिए उपयोगी साधन नहीं होते हैं। इससे उनकी संख्या और प्रभावकारिता में अंतर होता है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंचना मुश्किल हो जाता है। इस समस्या का समाधान करने के लिए, सरकारों को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में सुधार के लिए कदम उठाने की आवश्यकता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को और अधिक प्रेरित करने के लिए आधुनिक सुविधाएं प्रदान करने और संचार और परिवहन सुविधाओं में सुधार करके स्थानीय स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में सुधार के माध्यम से हो सकता है। पहुंच और उपयोगः ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी– भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच और पहुंच में कई चुनौतियां हैं। एक अध्ययन के अनुसार, लगभग 60 प्रतिशत ग्रामीण निवासी बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच के बिना हैं। इसका मतलब है कि बड़ी संख्या में लोग व्यक्तिगत स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंचने में सक्षम नहीं हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। वे सही समय पर बीमारियों और बीमारियों का इलाज नहीं कर पाते हैं, जिससे उनकी हालत और खराब हो सकती है। इसके अलावा, यह भी देखा गया है कि पिछले 12 महीनों में 40 प्रतिशत ग्रामीण निवासियों ने कोई चिकित्सा जांच नहीं कराई है । इसका मतलब यह है कि कई लोगों ने अपने स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखा है और न तो नियमित स्क्रीनिंग चरण को नियंत्रित किया है और न ही समय पर समस्याओं की पहचान की गई थी। ऐसे मामलों में, बीमारियों और बीमारियों को पहचानने और उनका इलाज करने का मौका खो जाता है, जो कई बार गंभीर बीमारियों में बदल सकता है।

इस चुनौती का सामना करते हुए, सरकारों को जन जागरूकता अभियानों और स्वास्थ्य सेवाओं के प्रसार को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। साथ ही गांवों में स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना और संचालन को बढ़ावा देना भी जरूरी है। इसके अलावा, सामुदायिक स्वास्थ्य प्रणालियों का उपयोग स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में सुधार और लोगों को जागरूक करने के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच और उपयोग में सुधार किया जा सकता है, जो लोगों के स्वास्थ्य में सुधार करके उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में मदद करेगा।

रोग प्रसार और ग्रामीण क्षेत्रों की चुनौतियां– भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में संक्रामक रोगों का उच्च प्रसार एक प्रमुख चिंता का विषय है। इसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में आवश्यक स्वास्थ्य सुविधाओं और जागरूकता का अभाव है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी से बीमारी का प्रसार बढ़ जाता है। पर्यावरण की अधिकता, स्वच्छता की कमी और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के कारण संक्रामक रोगों का प्रसार आसानी से संभव है। ग्रामीण क्षेत्रों में मलेरिया, डेंगू, टाइफाइड, अस्थमा और दस्त जैसी विभिन्न बीमारियों के मामले अधिक आम हैं। साथ ही स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के कारण लोगों की स्वास्थ्य जागरूकता भी कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश लोग स्वास्थ्य संबंधी जानकारी से वंचित हैं और सही जानकारी के अभाव में वे अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग नहीं रहते हैं। इससे न केवल बीमारी का प्रसार बढ़ता है बल्कि बीमारियों के सही उपचार में भी देरी होती है, जिससे लोगों के लिए गंभीर स्थिति पैदा हो सकती है। इस चुनौती का सामना करते हुए, सरकारों को सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों को मजबूत करने और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

सूचना का प्रसार करने की आवश्यकता है। साथ ही, स्वच्छता, जल स्वच्छता और हाथ की स्वच्छता जैसे सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे लोगों को स्वास्थ्य जागरूकता और स्वच्छता के महत्व के बारे में पता चलेगा और बीमारी के प्रसार को रोकने में मदद मिलेगी।

मातृ एवं शिशु मृत्यु दरः ग्रामीण क्षेत्रों की एक बड़ी चुनौती– भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में मातृ और शिशु मृत्यु दर की चुनौती एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य समस्या है। संयुक्त राष्ट्र इंटरएजेंसी (UN&MMEIG) की वर्ष 2020 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत का मातृ मृत्यु अनुपात (MMR) वर्ष 2000 में 384 से घटकर वर्ष 2020 में 103 हो गया है, जो वैश्विक गिरावट की दर से तीन गुना से अधिक है। इसके साथ ही शिशु मृत्यु दर में भी सुधार दिखाई दे रहा है। यह 2019 में प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 35 से घटकर 2020 में 32 हो गया है।

यह चुनौती ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की अपर्याप्तता, डॉक्टर–रोगी अनुपात और सामाजिक दृष्टिकोण से जुड़ी है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विवाह की उम्र, गर्भावस्था में उचित देखभाल की कमी और परिवार नियोजन की आवश्यकता गांवों में समस्याओं को बढ़ाती है। इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी और सुविधाओं की अनुपलब्धता के कारण ग्रामीण महिलाओं को आवश्यक देखभाल और अनुभूति की कमी होती है। नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से, हमें स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में सुधार लाने की दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता है। स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुंच बढ़ाने, स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता बढ़ाने और स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों को मजबूत करने के माध्यम से इस समस्या का समाधान किया जा सकता है। साथ ही गर्भावस्था में सही देखभाल को प्रोत्साहित करना, परिवार नियोजन के महत्व को समझाना और मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के लिए उचित जानकारी प्रदान करना भी महत्वपूर्ण है।

चुनौतियां व भौगोलिक बाधाएँ– भौगोलिक बाधाएं एक महत्वपूर्ण कारक हैं जो स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में कई तरह की चुनौतियाँ पेश करती हैं। दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता अक्सर परिस्थितियों के कारण प्रतिबंधित होती है। इन क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच के अलावा अन्य समस्याओं को प्राथमिकता दी जाती है, जैसे आर्थिक असमानता, भौगोलिक दूरी, अपर्याप्त संसाधनों की कमी या उपलब्धता और विभिन्न पारंपरिक धार्मिक और सांस्कृतिक धाराओं के अनुकूलन।

दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव कई कारणों से होता है। अक्सर, ऐसे क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए अप्रत्याशित भौगोलिक ढांचे और आधारों के लिए महंगे और जटिल संसाधनों की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, पानी, हवा और पर्यावरणीय परिस्थितियां परिणामस्वरूप स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच को प्रभावित कर सकती हैं, जिससे बीमारियां प्रमुख और इलाज में मुश्किल हो जाती हैं। दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच के विभिन्न कारण हो सकते हैं, जैसे अनुपयोगी परिवहन नेटवर्क, सामाजिक रूप से चुनौतीपूर्ण स्थितियां, युद्ध या संघर्ष क्षेत्र और नियंत्रित या असुरक्षित क्षेत्र। इन क्षेत्रों का स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता पर नकारात्मक प्रभाव

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

पड़ता है, जो आबादी के स्वास्थ्य और जीवन को खतरे में डाल सकता है। सरकारों और नागरिक समाज संगठनों को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में बाधाओं को खत्म करने के लिए सहयोग करना चाहिए। साथ ही, इन समस्याओं को टेलीमेडिसिन जैसी प्रौद्योगिकी के उपयोग से हल किया जा सकता है, जो दूरदराज के क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में सुधार कर सकता है।

इन सभी चुनौतियों का सामना करने के लिए उचित नीतियों, निवेश और समाज के सहयोग की आवश्यकता होती है। स्वास्थ्य पहुंच को बढ़ावा देने के लिए, सरकारों को स्वास्थ्य बजट बढ़ाने और अप्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए नई योजनाओं और परियोजनाओं को शुरू करने की आवश्यकता है।

वित्तीय सीमाएं– वित्तीय सीमाएं एक महत्वपूर्ण कारक हैं जो आय के निम्न स्तर के कारण स्वास्थ्य सेवाओं के लिए भुगतान करने में असमर्थता को बढ़ाती हैं। आमतौर पर गरीबी या आर्थिक असमर्थता के कारण लोगों के पास स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पर्याप्त पैसा नहीं बचता है। नतीजतन, उन्हें उचित चिकित्सा सेवाओं तक पहुंचने में कठिनाई होती है। गरीबी और आर्थिक अक्षमता के कारण, लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं के लिए भुगतान करने में समस्याएं हैं। ऐसे लोगों के पास उचित चिकित्सा सेवाओं तक पहुंच नहीं होती है, जो उनके स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। यह समस्या विशेष रूप से विकासशील और विकासशील देशों में देखी जा सकती है, जहां सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क कमजोर हैं और लोगों की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है। इस समस्या का समाधान करने के लिए, सरकारों को स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक सुलभ बनाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने की आवश्यकता है। विभिन्न सार्वजनिक और गैर–सरकारी संगठन भी आर्थिक रूप से कमजोर और असहाय लोगों तक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में सहायक हो सकते हैं।

उचित स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच बढ़ाने के लिये सरकारों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को मज़बूत करने, बेरोज़गारी कम करने और आर्थिक संवेदनशीलता बढ़ाने जैसे कई कदम उठाने की ज़रूरत है। इसके अलावा, सामाजिक जागरूकता बढ़ाने, लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं के महत्व के बारे में शिक्षित करने और चिकित्सा संस्थानों को गरीबों के लिए उपलब्ध विशेष सेवाओं को साझा करने में मदद करने के लिए सामुदायिक सहयोग की भी आवश्यकता है।

स्वास्थ्य शिक्षा का अभाव – स्वास्थ्य शिक्षा का अभाव एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जो हमें रोग की रोकथाम और स्वास्थ्य प्रथाओं के बारे में जागरूकता के बारे में चिंतित करता है। यह समस्या आमतौर पर विकासशील और विकासहीन देशों में अधिक देखी जाती है, जहां लोगों को सामाजिक और शैक्षिक प्रतिबंधों के कारण स्वास्थ्य सेवाओं और सूचनाओं तक पहुँचने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। स्वास्थ्य शिक्षा की कमी के कारण, लोग रोग की रोकथाम और स्वास्थ्य प्रथाओं के महत्व के बारे में जानकारी से वंचित रहते हैं। अधिकांश लोग ऐसी जानकारी से वंचित हैं जो उन्हें योग्य स्वास्थ्य प्राथमिकताओं से अवगत रहने में मदद कर सकती हैं। नतीजतन, ऐसे लोगों के संक्रामक रोगों का शिकार होने की संभावना बढ़ जाती है और उनकी स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने की क्षमता कम हो जाती है। स्वास्थ्य शिक्षा की कमी को दूर करने के लिए, सरकारों को नागरिक समाज

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

संगठनों, स्वास्थ्य संस्थानों और अन्य संबंधित संगठनों के साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है। लोगों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से विभिन्न स्तरों पर स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए। इसके अलावा, स्वास्थ्य संदेशों को सोशल मीडिया, जैसे टीवी, रेडियो और इंटरनेट के माध्यम से जनता तक पहुंचाने की भी आवश्यकता है।

समाधान व टेलीमेडिसिन का विस्तार– टेलीमेडिसिन एक ऐसी तकनीक है जो स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए दूरस्थ संचार और तकनीकी साधनों का उपयोग करती है। यह उन क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहां अस्थायी चिकित्सा सुविधाओं और चिकित्सकों की कमी है। दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में सुधार के लिए टेलीमेडिसिन का उपयोग किया जा रहा है। दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाने के लिए टेलीमेडिसिन का विस्तार एक बड़ा उपाय है। इन इलाकों में अक्सर डॉक्टरों की कमी हो जाती है और मरीज विभिन्न बीमारियों का इलाज नहीं करा पाते हैं। टेलीमेडिसिन द्वारा सुदूर गांवों में रहने वाले लोगों को उचित चिकित्सकीय सलाह और इलाज मिल सकता है। टेलीमेडिसिन के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में कई तरह की स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकती हैं, जैसे सामान्य चिकित्सा परामर्श, रोगों का निदान और उपचार, मरीजों की स्थिति की निगरानी और आवश्यकतानुसार मरीजों को अस्पतालों में भेजने के निर्णय। यह उन लोगों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो दूरदराज के क्षेत्रों में रहते हैं और वहां उच्च स्तर की चिकित्सा सुविधाओं तक पहुंच नहीं है।

टेलीहेल्थ के माध्यम से स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच में सुधार के कई लाभ हैं। सबसे पहले, यह लोगों को घर पर चिकित्सा सेवाओं का उपयोग करने की अनुमति देता है, इस प्रकार परिवहन लागत को कम करता है। दूसरा, यह दूरदराज के क्षेत्रों में लोगों को चिकित्सा देखभाल भी प्रदान करता है जहां डॉक्टरों की कमी है। तीसरा, यह उन रोगियों के लिए भी सहायता प्रदान करता है जिनके पास विकलांगता या अन्य शारीरिक–संबंधित सीमाओं के कारण चिकित्सा संसाधनों तक पहुंच नहीं है।

स्वास्थ्य कार्यकर्ता भर्ती और प्रशिक्षण– सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए भर्ती और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना महत्वपूर्ण है। इस तरह, न केवल स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की कमी को संबोधित किया जा सकता है, बल्कि नवीनतम चिकित्सा प्रौद्योगिकियों और उन्नत स्वास्थ्य प्रणालियों को भी लोगों तक लाया जा सकता है। इस अवधारणा को वास्तविकता बनाने के लिए, डब्ल्यूएचओ और सरकारी अनुदानकर्ताओं के साथ साझेदारी स्थापित की जा सकती है। ये कार्यक्रम स्वास्थ्य देखभाल में योगदान करने के लिए अपनी शैक्षिक और व्यावसायिक योग्यता के आधार पर प्रशिक्षित नौकरी चाहने वालों का चयन कर सकते हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में, सामाजिक संगठनों, स्थानीय स्वास्थ्य विभागों और अन्य प्रासंगिक संस्थानों के साथ सहयोग करना भी संभव है ताकि वे विभिन्न चिकित्सा क्षेत्रों में अनुभव प्राप्त कर सकें और अपने कौशल में सुधार कर सकें। इसके अलावा, उन व्यक्तियों को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है जो आत्मनिर्भर बनने में सक्षम होने के लिए अपने स्थानीय समुदायों की स्वास्थ्य देखभाल में योगदान करने के इच्छुक हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

यह क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक विकास को विकसित करेगा और स्वास्थ्य सेवाओं तक लोगों की पहुंच में सुधार करेगा।

सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान– सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान व्यापक पहल हैं जिनका मुख्य उद्देश्य समाज के सभी स्तरों पर स्वास्थ्य जागरूकता और शिक्षा बढ़ाना है। इन गतिविधियों का उद्देश्य विभिन्न बीमारियों के बारे में जागरूकता बढ़ाना, स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित करना और समाज में स्वास्थ्य संबंधी व्यवहारों में सकारात्मक बदलाव लाना है। इन अभियानों की सफलता बेहतर सामुदायिक स्वास्थ्य प्रणालियों के निर्माण, रोकथाम, शीघ्र निदान और रोगों के प्रभावी उपचार के लिए महत्वपूर्ण है। सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियानों के दायरे में जनसंख्या–विशिष्ट स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा कार्यक्रम, टीकाकरण अभियान और रोग नियंत्रण जागरूकता कार्यक्रम प्रसारित करने जैसी गतिविधियां शामिल हैं। इन प्रयासों के माध्यम से, सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवर और संगठन समाज के सभी स्तरों पर स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान और व्यवहार में सुधार करना चाहते हैं।

इन आंदोलनों की रणनीतियाँ विशेष रूप से स्थानीय संस्कृति और जरूरतों के अनुरूप हैं, और ऐसा करने में, समुदाय के सदस्यों की भागीदारी और सहयोग को बढ़ावा देती हैं। यह सार्वजनिक स्वास्थ्य संदेशों को अधिक प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने में मदद करता है और समाज में स्थायी परिवर्तन लाता है। स्वास्थ्य अभियान विभिन्न प्रकार के मीडिया चैनलों जैसे प्रिंट, टेलीविजन, रेडियो और डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करता है, जो व्यापक और विविध दर्शकों को संदेश देने में मदद करता है। इसके अलावा, वे युवा और तकनीक–प्रेमी लोगों के साथ संवाद करने के लिए इंटरैक्टिव वेबसाइटों, सोशल मीडिया अभियानों और मोबाइल ऐप जैसे आधुनिक उपकरणों का उपयोग करते हैं। इन तकनीकी साधनों के माध्यम से, सार्वजनिक स्वास्थ्य संदेशों को अधिक व्यक्तिगत और लक्षित बनाया जा सकता है, जिससे उनकी प्रभावशीलता में सुधार होता है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान की सफलता की कुंजी समुदाय के साथ संवाद करना और गहरे संबंध बनाना है। इसमें स्वास्थ्य सूचना के प्रसार और अपनाने को बढ़ावा देने के लिए सामुदायिक नेताओं, स्वास्थ्य पेशेवरों और नागरिक समाज संगठनों के साथ साझेदारी शामिल है। ये साझेदारी सामुदायिक स्तर पर स्वास्थ्य प्रथाओं में सुधार और सार्वजनिक स्वास्थ्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इन गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण पहलू जानकारी को अधिक प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिए लक्षित समुदायों की विशेष आवश्यकताओं और सांस्कृतिक प्रथाओं को समझना है। इस प्रकार का अनुकूलन स्वास्थ्य जानकारी को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाता है, जिससे समुदाय के भीतर स्थायी परिवर्तन होता है। साथ ही, सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियानों की सफलता के लिए निरंतर मूल्यांकन और प्रतिक्रिया की प्रक्रिया महत्वपूर्ण है ताकि समय के साथ रणनीतियों में सुधार किया जा सके।

निष्कर्ष– यह शोध पत्र ग्रामीण भारतीय समाज में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत विश्लेषण प्रदान करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच और पहुंच में बड़ी असमानताएं स्थानीय आबादी के स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं और राष्ट्रीय स्वास्थ्य

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

लक्ष्यों की उपलब्धि में बाधा डालती हैं। समस्या के मूल में भौगोलिक बाधाएं, वित्तीय बाधाएं, स्वास्थ्य शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की अल्प–रोजगार और असमान वितरण हैं। इस विश्लेषण से, यह स्पष्ट है कि समाधान खोजने के लिए एक बहु–आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। टेलीमेडिसिन का विस्तार करके, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की भर्ती और प्रशिक्षण देकर, सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान चलाकर और स्वास्थ्य शिक्षा में निवेश करके स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच और गुणवत्ता में सुधार होने की संभावना है। इसके अलावा, सरकारी नीतियों, सामुदायिक पहलों और निजी क्षेत्र की भागीदारी को मजबूत करना आवश्यक है।

अंततः, ग्रामीण भारत के ग्रामीण समाज में स्वास्थ्य सेवा की कमी को दूर करने के लिए एक व्यापक और ठोस प्रयास की आवश्यकता है। इसके लिए, सरकारें, स्वास्थ्य संगठन, सामाजिक संस्थान और समुदाय के सदस्यों को एक साथ काम करना चाहिए। भारत के स्वास्थ्य लक्ष्यों को तब तक पूरा नहीं किया जा सकता जब तक कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले सभी लोगों की स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच नहीं होगी। इस दिशा में किए गए उपायों से न केवल ग्रामीण आबादी के जीवन स्तर में सुधार होगा, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार करके भारत को एक स्वस्थ राष्ट्र बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

संदर्भ–

1. **स्वास्थ्य प्राथमिक देखभाल को सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की ओर बदलना: 2019 निगरानी रिपोर्ट**
2. **कौन। सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की ओर स्वास्थ्य प्राथमिक देखभाल को आगे बढ़ाना: 2019 निगरानी रिपोर्ट। जिनेवा: विश्व स्वास्थ्य संगठन। [https://apps.who.int/iris/handle/10665/324835] (https://apps.who.int/iris/handle/10665/324835)**
3. **विश्व स्वास्थ्य संगठन। (एस.ए.)वि॰ [सं॰] स्वास्थ्य प्राथमिक देखभाल (पीएचसी)। पोत प्राप्त करें https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/primary-health-care-(phc)**
4. **भारतीय स्वास्थ्य मंत्रालय। (2023). स्वास्थ्य सेवा की राष्ट्रीय गणतंत्र योजना: 2023. भारत सरकार।**
5. **संयुक्त राष्ट्र बाल मृत्यु दर अनुमान समूह (UN IGME)। बाल मृत्यु में स्तर और रुझान: संयुक्त राष्ट्र बाल मृत्यु दर अनुमान समूह 2020 द्वारा विकसित अनुमान। न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र बाल कोष।**
6. **संयुक्त राष्ट्र मातृ मृत्यु अनुमान समूह (UN IGME)। मातृ मृत्यु: स्तर और रुझान, 2000 से 2017। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (UNICEF), संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA), विश्व बैंक गठबंधन और संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या प्रभाग द्वारा विकसित अनुमान। न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र बाल कोष।**

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

7. "देश के गांवों में खराब स्वास्थ्य सेवाएं", दैनिक जागरण, 12 जनवरी 2022।
8. "अनुपयोगी परिवहन नेटवर्क के कारण गांवों में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी", भारतीय स्वास्थ्य रिपोर्ट, मार्च 2021।
9. "दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में बाधाएं", विश्व स्वास्थ्य संगठन, अक्टूबर 2020।
10. "गरीबी के कारण स्वास्थ्य सेवाओं की कम उपलब्धता", विश्व स्वास्थ्य संगठन, जुलाई 2021।
11. "भारत में गरीबी और स्वास्थ्य अधिकार ", भारतीय स्वास्थ्य रिपोर्ट, अक्टूबर 2020।
12. "स्वास्थ्य सेवाओं के लिए वित्तीय सीमाएं: एक व्यापक मूल्यांकन", अंतर्राष्ट्रीय विकास बैंक, मई 2019।
13. "स्वास्थ्य शिक्षा की कमी और इसके प्रभाव", विश्व स्वास्थ्य संगठन, जून 2020।
14. "स्वास्थ्य शिक्षा का महत्व", भारतीय स्वास्थ्य रिपोर्ट, अगस्त 2019।
15. "स्वास्थ्य जागरूकता का महत्व", स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार, जनवरी 2018।
16. "टेलीमेडिसिन: दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं का एक नया द्वार", भारतीय स्वास्थ्य रिपोर्ट, जनवरी 2023।
17. "टेलीमेडिसिन का महत्व और इसकी क्षमता", विश्व स्वास्थ्य संगठन, अगस्त 2022।
18. "टेलीमेडिसिन: दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए एक दृष्टिकोण", अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य निकाय, जून 2021।
19. IUHS (भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद): "स्वास्थ्य कार्यकर्ता भर्ती और प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए दिशानिर्देश", https://www.icmr.nic.in/sites/default/files/guidelines/Health_Workers_Recruitment_Training_Programme.pdf
20. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार: "स्वास्थ्य कार्यकर्ता भर्ती और प्रशिक्षण योजना", https://www.mohfw.gov.in/sites/default/files/7976674882149753121.pdf
21. भारतीय स्वास्थ्य विज्ञान संस्थान (आईएचएस), नई दिल्ली: "स्वास्थ्य और परिवार कल्याण भवन, स्वास्थ्य विभाग, भारत सरकार", http://www.nihfw.org/Doc/NCHRC__Final_18Dec07.pdf
22. https://www.mohfw.gov.in/
23. (https://www.who.int/india
24. (http://www.nia.nic.in/